Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 08, pp 199-206, August 2025

भारत-चीन एतिहासिक सभ्यतागत संबंधों में सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि और उसका सांस्कृतिक प्रभाव

शगुन चतुर्वेदी,

वरिष्ठ शोध अध्येता, सुरक्षा अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन संस्थान, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, कुंढ़ेला, वडोदरा,गुजरात

ईमेल: shgunchaturvedi@gmail.com

प्रस्तावना

भारत और चीन दो प्राचीन सभ्यताएँ है जिनका आपसी संबंध न केवल सहस्राब्दियों से सांस्कृतिक, बौद्धिक और आर्थिक आदान-प्रदान में संलग्न रहे हैं बल्कि इनके संबंध सहजीविता, संवाद और प्रतिस्पर्धा के विविध चरणों से भी गुजरे है। एतिहासिक रुप से बौद्ध धर्म, व्यापार मार्ग (सिल्क रूट), और विद्वत आदान-प्रदान(玄奘 ह्वेन सांग की भारत यात्रा और प्रसिद्ध भारतीय बौद्ध संतों की चीन यात्रा) ने दोनों देशों को जोड़ने का कार्य किया। परन्तु आधुनिक राष्ट्रीय सीमाओं के निर्माण और औपनिवेशिक काल के सीमांकन ने इन सभ्यतागत रिश्तों को तनावपूर्ण बना दिया। इसका चरम रूप वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध तथा तदुपरांत सीमा-विवादों में देखा जा सकता है।

यह शोध पत्र में गुणात्मक अधिगम के माध्यम से द्वितीयक स्रोतों से भारत और चीन के ऐतिहासिक- सांस्कृतिक संबंधों की पड़ताल करते हुए यह विश्लेषण करेगा कि कैसे सभ्यतागत दृष्टिकोणों में अंतर 'भारत का बहुलतावादी और चीन का केंद्रीकृत दृष्टिकोण' सीमा विवादों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता को और अधिक जटिल बनाते हैं। विशेष ध्यान अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों पर दिया जाएगा, जहाँ सांस्कृतिक पहचान, भाषा, धर्म और ऐतिहासिक स्मृति इन विवादों को सामाजिक स्तर पर भी प्रभावित करती हैं। इसके साथ ही शोध में यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि क्या प्राचीन सभ्यतागत जुड़ाव (जैसे नालंदा-लुंतई संबंध) को एक रणनीतिक-सांस्कृतिक माध्यम के रूप में पुनः सक्रिय कर दोनों देशों के बीच विश्वास बहाली और सीमाई सहयोग को बढ़ाया जा सकता है। यह अध्ययन इतिहास, अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा संस्कृति के अंतःविषयी दृष्टिकोण से भारत-चीन सीमा विवाद को देखने का प्रयास है, जो न केवल पारंपरिक भू-राजनीतिक विमर्श से आगे जाकर सभ्यता और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य को उजागर करेगा बल्कि यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन सीमा विवाद को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी समझने का प्रयास करेगा।

बीजरूप शब्द: भारत-चीन संबंध, सभ्यतागत दृष्टिकोण, सांस्कृतिक कूटनीति, एतिहासिक स्मृति और सीमा विवाद

परिचय

भारत और चीन दो ऐसी प्राचीन सभ्यताएँ हैं जिनकी ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक पहचान और दार्शनिक परंपराएँ न केवल एशिया में, बल्कि संपूर्ण विश्व में एक विशेष स्थान रखती हैं। कभी बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में, कभी व्यापारिक मार्गों के माध्यम से और कभी सांस्कृतिक आदान-प्रदान व तीर्थयात्राओं के द्वारा दोनों देशों का इतिहास हज़ारों वर्षों से एक-दूसरे से जुड़ा रहा है । यह संपर्क केवल राजनीतिक या कूटनीतिक नहीं था, बल्कि गहरे सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक संवाद का प्रमाण है। प्राचीन भारत और चीन के संबंधों का आरंभ संभवतः दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व जब चीन के सम्राटों ने पश्चिमी एशिया की ओर "सिल्क रूट" व्यापार मार्ग खोलने के समय से माना जाता है । यह भारत और चीन के बीच वस्त्र, औषधि, शिल्प, और सबसे महत्वपूर्ण, विचारों का आदान-प्रदान का मुख्य मार्ग बना। विशेषरूप से बौद्ध धर्म इस दोनों देशों के संबंधों का सबसे सशक्त माध्यम बना। न केवल भारत से बौद्ध भिक्षु चीन गए और वहाँ धर्म के सिद्धांतों का प्रचार किया बल्कि फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग जैसे चीनी यात्री भारत आए और यहाँ की धार्मिक, दार्शनिक, तथा शैक्षिक समृद्धि को अपने लेखन में दर्ज किया। (Liu X. , 2010)

दरअसल, आज की भारत-चीन राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में इन ऐतिहासिक संबंधों की गहराई अक्सर धुंधली हो गयी है या कहें तो विस्मृत हो गयी है। माना जाता है कि आधुनिक काल में दोनों राष्ट्रों के स्वतंत्र और संप्रभु इकाइयों के रूप में विकसित होने के साथ इनकी सीमाओं का निर्धारण एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया बन गया। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश भारत द्वारा निर्धारित किए गए मैकमोहन रेखा सीमांकन को चीन ने कभी औपचारिक रूप से स्वीकार नहीं किया। इसके परिणामस्वरुप स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत और चीन के बीच सीमा-विवाद की प्रारंभ के साथ अंत में वर्ष 1962 के युद्ध में परिवर्तित हो गया। सीमा-विवाद का यह स्वरुप केवल कूटनीतिक या सैन्य स्तर तक सीमित नहीं है बल्कि, यह उन सीमावर्ती क्षेत्रों की इन दोनों देशों की सभ्यताओं के मिलन स्थल रहे सांस्कृतिक और सभ्यतागत पहचान से भी जुड़ा हुआ है। अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख और अक्साई चिन जैसे क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से बौद्ध धर्म, तिब्बती संस्कृति और स्थानीय जनजातीय परंपराओं के केंद्र रहे हैं। ऐतिहासिक आधार पर चीन इन क्षेत्रों को अपना बताता है, जबकि भारत इन्हें अपनी बहुलतावादी और संघीय संरचना का हिस्सा मानता है। (Acharya, 2008)

हालाँकि, वर्तमान भारत-चीन संबंधों में सीमा-विवाद का केवल सामरिक या राजनैतिक समाधान पर्याप्त नहीं होगा। इसके लिए एक गहराई से जुड़ी सभ्यतागत समझ और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता है। जहाँ भारत और चीन के सीमा विवाद को केवल एक भौगोलिक संघर्ष नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक टकराव और सभ्यतागत संवाद यह शोध आलेख में देखने का प्रयास है। क्या प्राचीन संबंधों जैसे नालंदा विश्वविद्यालय और बौद्ध तीर्थयात्राओं को कूटनीतिक माध्यम के रूप में पुनः जीवित कर वर्तमान तनावों को कम किया जा सकता है शोध में यह विश्लेषण भी किया गया है। क्या यदि दोनों देश अपने इतिहास की विरासत को एक सकारात्मक रणनीतिक उपकरण के रूप में अपनाएँ तो भविष्य में विश्वास, सहयोग और स्थायित्व की एक नई राह संभव हो सकती है?

परिकल्पना और शोध प्रश्न

इस शोध आलेख की मुख्य परिकल्पनाएँ और शोध प्रश्न निम्नलिखित हैं:

सभ्यतागत दृष्टिकोणों में अंतर- भारत का बहुलतावादी और चीन का केंद्रीकृत सांस्कृतिक दृष्टिकोण सीमा विवादों को संवेदनशील एवं सांस्कृतिक रूप से अधिक जटिल बनाता है।

सीमा क्षेत्रों में सांस्कृतिक पहचान की भूमिका- लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों में स्थानीय संस्कृति, भाषा, धर्म और ऐतिहासिक स्मृति इन विवादों को केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक संघर्ष भी बनाते हैं।

सांस्कृतिक कूटनीति की पुनर्स्थापना- यदि प्राचीन सांस्कृतिक संपर्कों (जैसे बौद्ध संबंध, विश्वविद्यालयिक आदान-प्रदान) को रणनीतिक रूप से पुनर्जीवित किया जाए, तो भारत-चीन के बीच विश्वास बहाली संभव हो सकती है।

1. भारत और चीन के प्राचीन सभ्यतागत संबंध किस प्रकार के रहे हैं और उनका आज के कूटनीतिक संदर्भों पर क्या प्रभाव है?
2. भारत और चीन के बीच वर्तमान सीमा-विवादों की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?
3. सीमा क्षेत्रों (विशेषतः लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश) में सांस्कृतिक पहचान, धर्म, और स्थानीय परंपराएँ सीमा-विवादों को किस रूप में प्रभावित करती हैं?
4. भारत और चीन की सभ्यतागत दृष्टिकोणों में कौन-कौन से मूलभूत अंतर्विरोध हैं, और वे विवादों को किस प्रकार जटिल बनाते हैं?
5. क्या प्राचीन सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संबंधों का पुनरुद्धार वर्तमान भारत-चीन तनाव में एक सकारात्मक भूमिका निभा सकता है?

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र में गुणात्मक अधिगम के माध्यम से द्वितीयक स्रोतों से भारत और चीन के ऐतिहासिक- सांस्कृतिक संबंधों की पड़ताल करते हुए यह विश्लेषण किया गया है कि कैसे सभ्यतागत दृष्टिकोणों में अंतर 'भारत का बहुलतावादी और चीन का केंद्रीकृत दृष्टिकोण' सीमा विवादों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता को और अधिक जटिल बनाते हैं। विशेष ध्यान सांस्कृतिक पहचान, भाषा, धर्म और ऐतिहासिक स्मृति वाले अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख जैसे सीमावर्ती क्षेत्र इन विवादों को सामाजिक स्तर पर भी प्रभावित करती हैं। इसके साथ ही इस शोध में विश्लेषित करने का प्रयास है कि क्या प्राचीन सभ्यतागत जुड़ाव को एक रणनीतिक-सांस्कृतिक माध्यम के रूप में पुनः सक्रिय करने से दोनों देशों के बीच विश्वास बहाली और सीमाई सहयोग को बढ़ाया जा सकता है। यह अध्ययन इतिहास, अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा संस्कृति के अंतःविषयी दृष्टिकोण से भारत-चीन सीमा विवाद को देखने का प्रयास है, जो न केवल पारंपरिक भू-राजनीतिक विमर्श से आगे जाकर सभ्यता और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य को उजागर करेगा बल्कि यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन सीमा विवाद को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी समझने का प्रयास करेगा।

सभ्यता की जड़ों से राष्ट्र-राज्य तक भारत-चीन

भारत और चीन का संबंध न केवल दो राष्ट्रों का बल्कि हजारों वर्षों पुरानी दो गहरी और समृद्ध सभ्यताओं की हैं। इतिहास गवाह है कि यह संबंध न तो औपचारिक कूटनीति से शुरू हुआ और न ही केवल व्यापार तक सीमित था। यह एक जीवंत, बहुआयामी सांस्कृतिक, धार्मिक और बौद्धिक संवाद था जो एशिया के सामाजिक ताने-बाने को आकार देता रहा। भारत और चीन के बीच बौद्ध धर्म एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप प्राचीन काल से जब न तो राष्ट्र-राज्य की अवधारणा थी और न ही सीमाओं की स्पष्ट रेखाएँ तब से कार्य करता आ रहा था। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर सातवीं शताब्दी ईस्वी तक भारत से चीन और चीन से भारत आने-जाने वाले बौद्ध भिक्षुओं ने दोनों देशों की सांस्कृतिक और दार्शनिक सोच को एक-दूसरे के साथ साझा किया। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय दर्शन, विशेषकर नागार्जुन का मध्यम मार्ग, योगाचार, और विपश्यना जैसे अभ्यास, चीन में लोकप्रिय हुए। चीन ने इन शिक्षाओं को केवल स्वीकार ही नहीं किया, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित भी किया। (Sen, 2003)

ह्वेनसांग (Xuan zang) और फाह्यान (Fa xian) जैसे प्रसिद्ध चीनी यात्रियों ने भारत की यात्रा की नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। ह्वेनसांग ने न केवल नालंदा में वर्षों तक रहकर दर्शन और व्याकरण की शिक्षा प्राप्त की, बल्कि भारत की समाज व्यवस्था, धार्मिक परंपराओं तथा शिक्षा प्रणाली पर विस्तृत ग्रंथ भी लिखे। इसका प्रमाण उनकी रचना "Great Tang Records on the Western Regions" (大唐西域記) न केवल यात्रा विवरण मिलता है, बल्कि भारत-चीन

सांस्कृतिक संबंधों का भी उल्लेख है। इसके विपरीत, भारतीय भिक्षु भी चीन गए। महान भारतीय अनुवादक कुमारजीव ने बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत से चीनी में अनुवाद किया। माना जाता है कि यह ग्रन्थ महायान बौद्ध धर्म के प्रसार में भारी योगदान दिया था। इन अनुवादों और संवादों के माध्यम से भारत और चीन के बौद्ध विचारक, भिक्षु और शिक्षक एक ज्ञान-संस्कृति नेटवर्क का निर्माण करते रहे। इसके अतिरिक्त सिल्क रूट जैसे व्यापारिक मार्गों ने भी सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा दिया। इन मार्गों के माध्यम से न केवल वस्त्र, औषधियाँ और कलाकृतियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचीं, बल्कि विचार, भाषा और धार्मिक प्रतीकों का भी आदान-प्रदान हुआ। चीन की बौद्ध मूर्तिकला, मंदिर निर्माण की शैली, और चित्रकला के कई प्रारूपों में भारतीय प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है। (Sen, 2003)

इस प्रकार कह सकते है कि भारत-चीन संबंधों की नींव में केवल भूगोल या सामरिक हित नहीं, बल्कि गहरी सांस्कृतिक साझेदारी भी सम्मिलित मिलती है। सांस्कृतिक आत्मीयता और बौद्धिक सम्मान परस्पर संपर्क के आधार वाली यह साझेदारी आज के राष्ट्र-राज्य की सीमाओं से बहुत पहले की है। दोनों सभ्यताओं की संघर्ष की अपेक्षा संवाद को प्राथमिकता देने वाली ऐतिहासिक संदर्भ आज के सीमा विवादों और राजनीतिक तनावों की पृष्ठभूमि को समझने में महत्वपूर्ण है। (Phunchok, 2019) समकालीन भारत-चीन संबंधों को जब हम इस ऐतिहासिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों देशों के पास एक साझा विरासत है जिसे न केवल स्मरण करने की आवश्यकता है, बल्कि कूटनीतिक समाधान की नींव के रूप में पुनः जीवित करने की भी जरुरत है। यही सभ्यतागत दृष्टिकोण भविष्य में द्विपक्षीय संबंधों को स्थायित्व और समझ की दिशा में ले जा सकता है। (Scott, 2016)

औपनिवेशिक सीमांकन और आधुनिक विवादों की उत्पत्ति

आज की दोनों देशों के बीच सीमा-विवाद की जड़ें आधुनिक राष्ट्र-राज्य की अवधारणा से पहले की नहीं, बल्कि औपनिवेशिक काल में खींची गई उन रेखाओं में हैं जिन्हें स्थानीय भूगोल, संस्कृति या समुदायों की सहमति के बिना तय किया गया था। विशेषतः भारतीय ब्रिटिश शासन के दौरान खींची गई मैकमोहन रेखा और शिमला समझौते जैसे सीमांकन ने भविष्य के लिए तनाव का बीज बो दिया। ब्रिटिश भारत, तिब्बत और चीन के प्रतिनिधियों के बीच हुई वर्ष 1914 की शिमला संधि में ब्रिटिश प्रतिनिधि हेनरी मैकमोहन ने भारत-तिब्बत सीमा को स्पष्ट करने हेतु एक रेखा खींची जिसे "मैकमोहन रेखा" कहा जाता है। यद्यपि तिब्बत ने इस संधि पर हस्ताक्षर किए, किंतु चीन ने इसे अस्वीकार कर दिया। चीन का तर्क था कि तिब्बत एक स्वतंत्र सत्ता नहीं है और इसलिए वह अंतरराष्ट्रीय संधियों में पक्षकार नहीं हो सकता। भारत ने स्वतंत्रता के बाद इसी रेखा को अपनी आधिकारिक सीमा माना, जबकि चीन इसे आज भी अवैध मानता है। (Mark, 2013)

दूसरी ओर, पश्चिमी सेक्टर में अक्साई चिन का क्षेत्र जो ऐतिहासिक रूप से लद्दाख से जुड़ा रहा है। इस क्षेत्र में 1950 के दशक में चीन ने तिब्बत को शिनजियांग से जोड़ती एक रणनीतिक सड़क का निर्माण किया। जब तक भारत को इस निर्माण की जानकारी प्राप्त होती अत्यधिक समय बिट चुके थे। भारत ने इसके विरोध में अपना पक्ष रखा लेकिन यह दोनों देशों के संबंधों में गहरा अविश्वास पैदा कर दिया। चीन का दावा है कि यह क्षेत्र "ऐतिहासिक रूप से चीनी भूभाग" है, जबकि भारत इसे लद्दाख का अभिन्न हिस्सा मानता है। इन सीमांकन विवादों ने 1962 के भारत-चीन युद्ध का मार्ग प्रशस्त किया। इस युद्ध के दौरान चीन ने न केवल अक्साई चिन पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया, बल्कि अरुणाचल प्रदेश में अस्थायी रूप से घुसपैठ की। यह स्वतंत्र भारत के लिए एक गहरा आघात था। युद्ध के बाद चीन ने अरुणाचल से पीछे तो हटा लेकिन अक्साई चिन पर अपना नियंत्रण बनाए रखा। इस उत्पन्न हुई अस्थिर स्थिति को "Line of Actual Control" (LAC) के नाम से जाना गया। (Acharya, 2008)

हालांकि, युद्ध के दशकों बाद दोनों देशों ने ठंडी पड़ी संबंधों में फिर से गर्माहट देना शुरू किया। वर्ष 1993, 1996 और 2005 में सैनिकों को सीमित करना, विवादास्पद क्षेत्रों में गश्त को नियंत्रित करना और संवाद के द्वार खोलने वाले कई समझौते किए। इसको सीमा क्षेत्र में शांति और स्थायित्व बनाए रखने के लिए समझौते के नाम से जाना गया। वैसे तो थोड़े समय पर दोनों देशों के सीमओं पर छोटे संघर्ष देखने को मिलते रहे लेकिन 2017 के डोकलाम संकट और 2020 के गलवान संघर्ष ने समझौते व्यवहारिक स्तर पर स्थायित्व पर प्रश्न चिन्ह खड़े कर दिए। कहते है कि डोकलाम में दोनों देशों की सेनाओं की टकराव ने भूटान को भी इस विवाद में खींच लिया। वहीँ गलवान घाटी संघर्ष में सैनिकों की मृत्यु ने दोनों देशों के मध्य दशकों से चले आ रहे "नो बुलेट फायर" सिद्धांत को ताक़ पर रख दिया। इससे यह सिद्ध होता है कि सीमा को लेकर संवेदनशीलता सिर्फ सैन्य या भू-राजनीतिक ही नहीं, बल्कि गहराई तक जमी राजनैतिक और सांस्कृतिक पहचान से भी जुड़ी है।

बहरहाल, औपनिवेशिक सीमांकन द्वारा खिंची गई कृत्रिम रेखाएँ न केवल दोनों देशों के भौगोलिक दावे को प्रभावित करती हैं, बल्कि इनके सांस्कृतिक व सभ्यतागत दृष्टिकोणों को भी परस्पर टकराव की ओर ले जाती हैं। इस प्रकार कहे तो विवाद की स्थाई समाधान के लिए इन रेखाओं पर मात्र सैन्य समझौतों से नहीं, बल्कि सभ्यतागत संवाद और ऐतिहासिक समझदारी की भी आवश्यकता है।

सभ्यतागत दृष्टिकोणों में अंतर्विरोध

गौर करने वाली बात है कि दो प्राचीन सभ्यताएँ वाला भारत-चीन के मध्य सांस्कृतिक सोच और शासन संरचना में मौलिक अंतर हैं। यह अंतर वैचारिक स्तर व्यवहार और नीति निर्माण में भी स्पष्ट रूप से झलकते हैं। विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में सांस्कृतिक पहचान, स्थानीय परंपराओं और भाषाई विविधता को लेकर अपनाई गई नीतियों में यह अंतर देखने को मिलते हैं।

अ. भारत का बहुलतावाद

"एकं सत् विप्रा बहुधा वदंति" जैसे विचारों पर भारत की सांस्कृतिक परंपरा आधारित है। भारतीय सभ्यता ने हमेशा बहुलता को एक मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। यही कारण है कि भारत में धर्म, जाति, भाषा, रीति-रिवाज, और जीवनशैली की अपार विविधता देखने को मिलती है जिसे संविधानिक स्तर पर भी मान्यता दी गई है। भारतीय राज्य तंत्र ने लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश,

नागालैंड आदि में स्थानीय भाषाओं, जनजातीय संस्कृति और धार्मिक विश्वासों को विशेष अधिकार और संरक्षण प्रदान किया है। जैसे अरुणाचल प्रदेश में मोंपा समुदाय बौद्ध परंपरा का पालन करता है, और नागालैंड में ईसाई समुदाय को पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है। इसी तरह लद्दाख में बौद्ध और शिया मुस्लिम समुदायों के बीच सामाजिक सामंजस्य देखने को मिलता है। दावा है भारत की यह बहुलतावादी नीति न केवल सीमावर्ती क्षेत्रों में लोगों को सांस्कृतिक सुरक्षा की भावना राष्ट्रीय धारा से स्वेच्छा से जोड़े रखते हैं, बल्कि यह सांस्कृतिक समावेशिता के माध्यम भी है।

ब. चीन का केंद्रीकरण

इसके ठीक उलट, चीन का सभ्यतागत दृष्टिकोण अधिक केंद्रीकृत आधारित है। चीन की शासन प्रणाली में "एक चीन नीति" के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता को सर्वोपरि रखा गया है। जो सांस्कृतिक विविधता को अक्सर अस्थिरता के स्रोत के रूप में देखता है। तिब्बत, शिनजियांग और हांगकांग जैसे क्षेत्रों में परंपरागत भाषाओं, धर्मों और परंपराओं को राज्य की निगरानी में लाने का प्रयास होता रहता है। चीन न केवल तिब्बत में बौद्ध मठों की स्वतंत्रता सीमित किया हुआ है, बल्कि धार्मिक नेताओं की नियुक्ति में भी हस्तक्षेप करता है। (Liu X. , 1994) इसी प्रकार झिंजियांग में उइगर मुस्लिम समुदाय के धार्मिक और सामाजिक जीवन पर भी प्रतिबंध लगाए गए हैं। चीन की यह नीति न केवल सीमावर्ती क्षेत्रों को भौगोलिक नियंत्रण तक सीमित नहीं रखती है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक आत्मा को भी राज्य के अधीन करने का प्रयास करती है। भारत स्थानीय पहचान को प्रोत्साहित करता है। चीन उसमें सांस्कृतिक समरूपता की माँग करता है। यह दृष्टिकोण भारत की नीतियों के पूर्णतः विपरीत है। । यही कारण है कि चीन अरुणाचल प्रदेश को "दक्षिण तिब्बत" कहता है और वहाँ के मठों और बौद्ध परंपराओं को तिब्बती राज्य संरचना से जोड़कर देखने की कोशिश करता है। (Phunchok, 2019)

स. टकराव की प्रकृति: सांस्कृतिक अस्मिता बनाम राज्यीय नियंत्रण

प्रश्न है कि क्या भारत और चीन की यह विरोधाभासी सांस्कृतिक नीति सीमा-विवादों को और भी संवेदनशील बना देती है। जहाँ स्थानीय समुदायों को अपने मूल स्वरूप में जीने की स्वतंत्रता भारत देता है तो वहीं चीन वहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं को राज्य के अनुसार ढालने की चेष्टा से स्थानीय लोगों में प्रतिरोध की भावना पनपती है। जो अक्सर भारत-चीन संबंधों में तनाव का कारण का एक रूप में देखा जाता है। बहरहाल, सभ्यतागत दृष्टियों में यह अंतर न केवल सैद्धांतिक, बल्कि व्यवहारिक रूप से सीमा-विवाद के स्वरूप, उसकी जटिलता और समाधान की दिशा को भी गहराई से प्रभावित करता है।

द. सीमा क्षेत्रों में सांस्कृतिक प्रभाव और स्थानीय अस्मिता

दोनों देशो के मध्य जारी सीमा-विवाद मात्र भू-राजनीतिक या सैन्य प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं रखता हैं, बल्कि वे उन सीमावर्ती क्षेत्रों की स्थानीय सांस्कृतिक अस्मिता, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक स्मृति को गहराई से जोड़ता हैं। विशेषकर अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख जैसे क्षेत्र केवल रणनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रश्न है कि अरुणाचल प्रदेश की बौद्ध विरासत और तिब्बती संबंध से क्या संबंध रहे है? अरुणाचल प्रदेश का तवांग क्षेत्र भारत और चीन के बीच विवाद का केंद्र बिंदु रहा है। चीन इसे "दक्षिण तिब्बत" कहकर अपना क्षेत्र मानता है, जबकि भारत इसे न केवल अपनी सीमाओं का हिस्सा मानता है, बल्कि एक संवैधानिक राज्य के रूप में इसे राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संरक्षण भी प्रदान करता है। तवांग में स्थित तवांग मठ (Tawang Monastery) भारत का सबसे बड़ा और एशिया का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। यह मठ तिब्बती बौद्ध परंपरा के गेलुग्पा संप्रदाय से जुड़ा है, और ऐतिहासिक रूप से ल्हासा के दलाई लामा संस्थान से इसका आध्यात्मिक संबंध रहा है। इसी मठ में छठे दलाई लामा का जन्म हुआ था, जो चीन के दृष्टिकोण से इस क्षेत्र को तिब्बती विरासत का हिस्सा बनाता है। (Liu X. , 1994)

हालाँकि, भारत ने इस क्षेत्र की बौद्ध परंपराओं को स्वतंत्र रूप से फलने-फूलने दिया है। तिब्बती भाषा बोलने वाला मोंपा समुदाय इस क्षेत्र का प्रमुख जनजातीय समूह है जिसे भारतीय लोकतंत्र ने उसे पूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्वायत्तता प्राप्त की है। अरुणाचल प्रदेश राज्य सरकार द्वारा बौद्ध शिक्षण संस्थानों, तीर्थ स्थलों और सांस्कृतिक उत्सवों को संरक्षित किया गया है। इसके उलट, चीन की तिब्बत की बौद्ध विरासत पर अपना आधिकारिक नियंत्रण स्थापित करने की नीति न केवल मठों की गतिविधियों को नियंत्रित करता है, बल्कि धार्मिक नेताओं की नियुक्ति में सरकार की भूमिका निर्धारित करता है। अतः तवांग जैसे क्षेत्र का भारत में होना केवल भू-राजनीतिक प्रश्न नहीं, बल्कि धार्मिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक भी है। (Deepak, 2020)

यद्यपि लद्दाख और अक्साई चिन मिश्रित संस्कृति ही रणनीतिक तनाव को जोर देती है। लद्दाख भारत के सबसे बहुसांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से विविध क्षेत्रों में से एक है। यहाँ बौद्ध, शिया मुस्लिम (मुख्यतः कारगिल क्षेत्र में) और बाल्टी जैसे समुदायों का सह-अस्तित्व है। लद्दाख की भौगोलिक स्थिति, तिब्बत से इसकी ऐतिहासिक निकटता, और संस्कृति में बौद्ध तथा मध्य एशियाई प्रभाव इस क्षेत्र को विशिष्ट बनाते हैं। (Liu X. , 1994) लद्दाख का एक भाग अक्साई चिन 1962 के युद्ध के बाद से चीन के नियंत्रण में है। यह क्षेत्र भले ही अब चीन के प्रशासन के अधीन हो पर इसका सांस्कृतिक संबंध लद्दाख से रहा है। भारत इस क्षेत्र को जम्मू-कश्मीर (अब लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश) का अभिन्न हिस्सा मानता है। स्थानीय जनसंख्या की सांस्कृतिक पहचान, बोलचाल की भाषा और धार्मिक परंपराएँ भारत की बहुलतावादी व्यवस्था के अनुरूप हैं।

तिब्बत और शिनजियांग को जोड़ता अक्साई चिन चीन के लिए रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। चीन वहाँ सड़कों और सैन्य अवसंरचना का निर्माण कर इसे एक "सुरक्षित गलियारा" तो बनाने की प्रक्रिया ने न केवल वहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं को उपेक्षित किया, बल्कि यह एक निर्जन सैन्य क्षेत्र जैसा बना दिया जहाँ सांस्कृतिक जीवन लगभग समाप्त हो चुका है।

इन क्षेत्रों को लेकर सांस्कृतिक अस्मिता बनाम भू-राजनीतिक दावे क्या है? यह स्पष्ट है कि सीमा निर्धारण में तवांग और अक्साई चिन क्षेत्रों की सांस्कृतिक जटिलता और ऐतिहासिक पहचान को अनदेखी और मात्र राजनीतिक या सैन्य दृष्टिकोण से निर्धारण वहां की स्थानीय समुदायों के आत्मसम्मान और सांस्कृतिक विरासत के लिए हानिकारक होने वाला है। भारत का दृष्टिकोण जहाँ इन क्षेत्रों को स्थानीय संस्कृति के साथ जोड़कर देखने का है, वहीं चीन का रुख अक्सर ऐतिहासिक दावे और प्रशासनिक नियंत्रण पर आधारित है। यही कारण है कि भारत इन क्षेत्रों में जनसंख्या की भागीदारी, चुनाव प्रक्रिया और सांस्कृतिक उत्सवों को प्रोत्साहित करता है, जबकि चीन वहाँ नियंत्रण और निगरानी पर बल देता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि सीमावर्ती क्षेत्रों की सांस्कृतिक अस्मिता केवल परंपरा की बात नहीं, बल्कि राष्ट्रीय नीति और भू-राजनीतिक स्थिरता से भी जुड़ी हुई है। इन क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषताओं का सम्मान से ही सीमाओं पर स्थायी शांति संभव होगी।

सांस्कृतिक कूटनीति और समाधान की संभावनाएँ

एक तरफ जहाँ राजनीतिक और सैन्य उपाय तात्कालिक तनाव को नियंत्रित करने में सहायक हो सकते हैं, तो वहीं दूसरी तरफ दीर्घकालिक विश्वास निर्माण और संबंध सुधार के लिए सांस्कृतिक कूटनीति (cultural diplomacy) एक अत्यंत प्रभावी उपकरण है। भारत और चीन के मध्य समृद्ध और गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रिश्तों का यदि पुनः सक्रिय रूप से उपयोग किया जाए तो वर्तमान सीमा-विवादों के समाधान की राह सांस्कृतिक धरातल पर आसान हो सकती है।

अ. बौद्ध धर्म एक साझा विरासत के रूप में: स्पष्ट है कि दोनों देशों के मध्य में बौद्ध धर्म ऐतिहासिक रूप से एक सांस्कृतिक सेतु का काम किया है। भारत में उद्गम हुआ बौद्ध धर्म को चीन ने अपनाकर अपने धार्मिक और दार्शनिक ढाँचे में सम्मिलित किया। बौद्धिक और धार्मिक संबंध की नींव के रूप में ह्वेनसांग और फाह्यान जैसे चीनी यात्रियों की भारत यात्राएँ और नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन हैं। आज भी बौद्ध धर्म को कूटनीतिक माध्यम के रूप में उपयोग किया जा सकता है। भारत के पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय को एशियाई बौद्ध अध्ययन के एक सांस्कृतिक मंच के रूप में विकसित होना भारत-चीन के विद्वान, छात्र, भिक्षु और शोधकर्ताओं के लिए मिलकर अध्ययन, संवाद और अनुवाद परियोजनाओं की राह सुदृढ़ हो सकती है। इसी तरह चीन के लुंतई और दूनहुआंग जैसे स्थलों में भारतीय बौद्ध परंपरा के अवशेषों को उजागर कर साझा विरासत के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।

ब. शैक्षणिक और बौद्धिक सहयोग: विशेषज्ञों की दावा है कि भारत और चीन के विश्वविद्यालयों के बीच साझेदारी को प्रोत्साहन देना, साझा शोध परियोजनाओं, छात्र विनिमय कार्यक्रमों और संगोष्ठियों का आयोजन सांस्कृतिक समझ को बढ़ा सकता है। भारत के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, और शांतिनिकेतन जैसे संस्थान चीनी भाषा और संस्कृति के अध्ययन के लिए आदर्श मंच बन सकते हैं। इसी प्रकार, चीन के प्रमुख विश्वविद्यालयों में भारतीय दर्शन, इतिहास और बौद्ध अध्ययन को पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा सकता है। सांस्कृतिक संबंधों के पुनर्निर्माण के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का भी उपयोग किया जा सकता है जैसे संयुक्त वृत्तचित्र, बौद्ध कला पर आधारित वेब सीरीज़, भाषाई आदान-प्रदान के ऐप, और साझा डिजिटल संग्रहालय। चीन में WeChat, Baidu जैसे प्लेटफ़ॉर्मों पर भारतीय साहित्य, योग, आयुर्वेद और दर्शन को स्थानीय भाषा में प्रचारित करना और भारत में चीनी दर्शन एवं इतिहास का अनुवादित अध्ययन करना दोनों देशों में सह-अस्तित्व की भावना को मजबूत कर सकता है। लेकिन डिजिटल माध्यमों से चीनी जासूसी प्रकरण सर्व विदित है।

स. धार्मिक और आध्यात्मिक संवाद: यह भारत के लिए एक कूटनीतिक अवसर हो सकता है कि वह दलाई लामा, बौद्ध भिक्षु समुदाय, और अरुणाचल व लद्दाख जैसे क्षेत्रों के धार्मिक नेताओं को भारत-चीन सांस्कृतिक संवाद में एक आध्यात्मिक प्रतिनिधि के रूप में स्थापित करे। यह प्रक्रिया धर्म को राजनीति से अलग रखकर आध्यात्मिक सहयोग का माध्यम बना सकती है। भारतीय और चीनी बौद्ध मठों के बीच तीर्थयात्रा कार्यक्रम, संयुक्त ध्यान शिविर, और धार्मिक अनुवाद परियोजनाएँ सांस्कृतिक पुनर्संवाद की दिशा में सहायक हो सकती हैं। इससे आम जनता के स्तर पर भी एक सकारात्मक धारणा का निर्माण होगा, जो राष्ट्रीय स्तर पर शांति और सहयोग का आधार बन सकती है।

द. सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से संवाद के रूप में भारत-चीन सांस्कृतिक महोत्सव, कला-प्रदर्शनियाँ, फिल्म समारोह और पारंपरिक संगीत/नृत्य कार्यक्रमों का आयोजन दोनों देशों के बीच "सॉफ्ट पावर" के रूप में उपयोग हो सकता है। इससे दोनों देशों की आम जनता के बीच गलतफहमियों और संदेह को दूर कर पारस्परिक समझ और सौहार्द को बल मिल सकता है। इस प्रकार, यदि भारत और चीन अपनी प्राचीन सांस्कृतिक पूँजी को केवल अतीत का विषय नहीं, बल्कि भविष्य के रणनीतिक संसाधन के रूप में देखें, तो न केवल सीमा-विवाद की जटिलता को समझना आसान होगा, बल्कि इसका समाधान भी स्थायी, शांतिपूर्ण और मानव-केंद्रित बन सकेगा। (Sheel & Tsui, 2021) लेखक वर्ष 2018 में भारत सरकार द्वारा चीन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में गए थे। चीन की सामान्य जनमानस और सताधारियों के मध्य भारत को लेकर भारत के प्रति दृष्टिकोण में अंतर पाया। एक तरफ जहाँ सामान्य जनता में इन सांस्कृतिक जुड़ाव भारत को प्रेरणास्रोत के रूप में है वहीँ, सताधारियों में भारत की नकारात्मक छवि है।

निष्कर्ष

भारत और चीन के मध्य हजारों वर्षों की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की गहराइयों में समाहित संबंधों को समझने के लिए केवल भू-राजनीतिक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है। ये । आज जब दोनों राष्ट्र आधुनिक राष्ट्र-राज्य के रूप में सीमा-विवादों में उलझे हुए हैं, तब सभ्यतागत दृष्टिकोण से भी समझना आवश्यक हो जाता है। यहाँ स्पष्ट होता है कि भारत और चीन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक संपर्क, व्यापारिक मार्ग, तथा शैक्षिक आदान-प्रदान ने एक गहन सांस्कृतिक विरासत का निर्माण किया है। चाहे वह फाह्यान और ह्वेनसांग की यात्राएँ हों या नालंदा और लुंतई जैसे ज्ञान केंद्र, दोनों सभ्यताओं ने एक-दूसरे को न केवल ज्ञान दिया, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध भी किया। परंतु आधुनिक काल की औपनिवेशिक सीमाओं और राष्ट्रवादी राजनीति ने इन संबंधों में संदेह, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है। लद्दाख, अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश जैसे सीमावर्ती क्षेत्र केवल भूभाग नहीं हैं, बल्कि वे जीवित सांस्कृतिक इकाइयाँ हैं जहाँ धर्म, भाषा, जातीय पहचान और ऐतिहासिक स्मृति गहराई से जमी हुई है। इन क्षेत्रों में चीन की केंद्रीकृत नीति और भारत की बहुलतावादी नीति आमने-सामने आ जाती है, जिससे विवाद केवल भू-संरचना का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व का संघर्ष बन जाता है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारत विविधता को सहेजने वाला राष्ट्र तो चीन एकरूपता की नीति पर चलने वाला सभ्यतागत दृष्टियों में मूलभूत अंतर हैं। यहीं अंतर लद्दाख और अरुणाचल जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से सामने आता है। सांस्कृतिक कूटनीति, सभ्यतागत संवाद, और ऐतिहासिक सेतुओं का पुनर्निर्माण के रूप में समाधान का मार्ग अभी भी खुला है। यदि दोनों देश अपने प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों को आज की रणनीतिक ज़रूरतों से जोड़कर पुनः जीवित करें, तो यह सीमा विवादों को न केवल सैन्य या कूटनीतिक, बल्कि विश्वास आधारित, मानव केंद्रित समाधान की ओर भी ले जा सकता है। दोनों देश बौद्ध धर्म, शिक्षा, साहित्य, और दर्शन के माध्यम से एक साझा सभ्यतागत मंच का निर्माण और उन्हें पारस्परिक समझ और सम्मान की ओर ले जाना एक महत्वपूर्ण पहलू यह हो सकता है। नालंदा और लुंतई के पुराने रिश्ते इसका आधार बन सकते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल शांति की राह खोलता है, बल्कि एशिया और विश्व में स्थायित्व, सहयोग और सह-अस्तित्व की संभावनाओं को भी पुष्ट करता है।

सन्दर्भ सूची:

Alka Acharya. (2008). China & India: Politics of Incremental Engagement. Har-Anand Publication PVT LTD. https://doi.org/ISBN-10 : 8124114420

B. R. Deepak. (2020). India and China: Beyond the Binary of Frienship and Enmity. Springer. https://doi.org/https://doi.org/10.1007/978-981-15-9500-4

Chi-kwan Mark. (2013). China and the World since 1945: An International History. Taylor & Francis Books. https://doi.org/ISBN: 978-0-415-60651-6

David Scott. (2016). Buddhism in Current China-India Diplomacy. Journal of Current Chinese Affairs, 45(03). https://doi.org/https://doi.org/10.1177/186810261604500305

FAIR Team. (11 April 2023). India-China border dispute timeline. Foreign Affairs Insight and Review: https://fairbd.net/india-china-border-dispute-timeline से पुनर्प्राप्त

Kamal Sheel, & Brian Tsui. (2021). Kamal Sheel, India–China ‘Connectedness’. In: Beyond Pan-Asianism. Oxford University Press. https://doi.org/DOI: 10.1093/oso/9780190129118.003.0006

Saheb Singh Chadha. (11 December 2024). Negotiating the India-China Standoff: 2020–2024. CARNEGIE India: https://carnegieendowment.org/research/2024/12/negotiating-the-india-china-standoff-2020-2024?center=india&lang=en& से पुनर्प्राप्त

STOBDAN Phunchok. (2019). THE GREAT GAME IN THE BUDDHIST HIMALAYAS:. Penguin Randome House India Private Limited. https://doi.org/9789353056759

Tansen Sen. (2003). Buddhism, Diplomacy, and Trade: The Realignment of Sino-Indian. University of Hawai'i Press and the Association for Asian Studies. https://doi.org/BQ628 .S455 2003

Xinru Liu. (2010). The Silk Road and World History. Oxford Universsity press. https://doi.org/ISBN 978-0-19-516174-8; ISBN 978-0-19-533810-2

Xuecheng Liu. (1994). The Sino Indian Border Dispute and Sino Indial Relations. University Press of America. https://doi.org/ISBN 0 8191-9699-1

Y. Zhang. (2015). Cultural Identity and the China–India Border Dispute. Journal of Contemporary China,, 24(91), 666–682.